शिव के अन्दर (स्वरूप में अभिन्नरूप से) विद्यमान भाव पदार्थों का बाह्यरूप में प्रकाशन होता है।

५५. परमेश्वरो नरकेऽपि स एवास्ते, न तु तदतिरिक्तः कश्चिदस्तीत्यैक्यमेव स्थिरीकृतम्। (शिदृवृ, ३६)

नरक में भी वही परमेश्वर स्थित है क्योंकि उसके अलावा किसी का अस्तित्व ही नहीं है। इस प्रकार (सर्वविध) ऐक्य ही सिद्ध होता है।

५६. सर्वभावेषु स्वात्मैव शिव इति व्यवहर्तव्यम्।

(शिदृवृ, ५)

समस्त भाव पदार्थों (प्रमातृ-प्रमेयादि) में आत्मरूप शिव ही (अभिव्यक्त होता) है –ऐसा व्यवहार करना चाहिये (यही व्यवहार परमार्थ है)।

५७. भेदा अपि तदात्मकाः ··· ···। (शिदृवृ, ३५)

भेद भी उस (शिव) के रूप वाले ही हैं अर्थात् शिवरूप हैं, उनमें भी शिवता है।

५८. भेदः शिवात्मकः। (शिदृवृ, १२८)

भेद (भी) शिवरूप (ही) है।

५९. एकमेव चित्तत्वमनन्तविश्वरुपमिति। (शिदृवृ, १४७)

एक ही चित् तत्त्व अनन्त विश्व के रूप में अभिव्यक्त होता है।

६०. मायाशक्तिवशात् तथैकत्वाप्रथनादनेकत्वम्। वस्तुतस्त्वभेद इति। (शिदृवृ, १४२)

माया शक्ति के कारण, एकत्व के अज्ञान के फलस्वरूप अनेकता दिखाई देती है वास्तव में तो (प्रमाता व प्रमेय में) अभेद ही है।

६१. यथा न योगिनो नानासैन्यशरीरकैर्गजरथतुरगपदातिरूपैरवस्थितस्यात्मविभागस्तथा परमेश्वरस्य मध्योत्कृष्टनिकृष्टकैर्देवमनुष्यतिर्यगादिरूपैरविभेदः सर्वशक्तिबोधमात्ररूपस्यैकत्वनियमात्। अथवाऽत्यन्तप्रसिद्धोऽयं दृष्टान्तः यथाम्बुधेस्तरंगाणां चैक्येऽपि व्यवहारभेदस्तथा शिवस्य विश्वस्य च।··· (शिदृवृ, ११३)

जिस प्रकार योगी हाथी, रथ, घोड़े, पैदल आदि अगणित सेनारूपों

में स्वयं को अभिव्यक्त करते हुए भी स्वयं के स्वरूप को विभाजित नहीं करता अर्थात् एक और अविकृत बना रहता है उसी प्रकार परमेश्वर भी उत्कृष्ट, मध्य और निकृष्ट (सृष्टि द्वारा) क्रमशः देव, मनुष्य और पक्षी आदि रूपों में अभिव्यक्त होते हुए भी अभिन्न बना रहता है क्योंकि उसका समस्त शक्तियों का बोध एक रूप है। अथवा (इसी तथ्य को) अन्य प्रसिद्ध उदाहरण (से समझाया जासकता) है कि जैसे सागर के एक होनेपर भी लहरों के द्वारा व्यावहारिक दृष्टि से भेद कहा जाता है वैसे ही शिव और विश्व में भी (पारमर्थिक दृष्टि से अभेद है तथा व्यावहारिक दृष्टि से भेद) है।

६२. संसारव्यवहारोऽप्यविद्या नाम न पदार्थान्तरं भवति ईश्वरस्यैव तथात्वेन लोकयात्रात्मतया तथावस्थानात्। शास्त्रमपि वा व्यवहारगामि संस्कारोपदेशकं न शिवतत्त्वभेदाय।……

(शिदृवृ, ११५–६)

सांसारिक व्यवहार भी अविद्या ही है, कोई अन्य पदार्थ नहीं क्योंकि ईश्वर ही लोकव्यवहार के लिए संसाररूप में अभिव्यक्त होता है। शास्त्र भी व्यवहार के अनुकूल संस्कारों का उपदेश देनेवाला है, न कि शिवतत्त्व को (पारमार्थिक दृष्टि से) भिन्नरूप में बताने वाला है।

६३. तत्र हि कल्प्यतां निमित्तं यत्रातद्रूपत्वे तद्रूपतोद्भवः। अथैवं चोद्यते-पूर्वं शान्तरूपत्वमजगद्रूपत्वं पश्चाज्जगद्रूपतेत्यपूर्वताया निमित्तं वाच्यमिति। तन्न, यत्राभ्युपगमे, शान्तेऽपि शिवत्वं स्थूलेऽपि जगद्रूपत्वे शिवत्वमेव वर्णितं तत्र शान्तता शिवरूपता का स्यात्, ब्रूहि एतत्। शान्तमपि हि तव वस्तु, वस्तु च सत्तामयं, सत्ता भवत्ता भवनकर्तृता, स्वातंत्र्यात्मकं च कर्तृत्वं चिद्रूपस्येच्छादिशक्तिमत इति सर्वं वस्तु शिवः। (शिदृवृ, ११६)

निमित्त कारण की कल्पना तो वहाँ की जाए जहाँ कारण (कार्य के रूप में) वैसा रूप ग्रहण करे जो उसमें न हो। यदि ऐसा कहो कि पहले वह (शिव) शान्तरूप था अजगद्रूप था और बाद में जगद्रूप बन गया तो, इस अपूर्वता में कोई निमित्तकारण अवश्य होना चाहिये। यह बात स्वीकार-योग्य नहीं है। इस मत में शान्तता में भी शिवता है और जगत् के स्थूलरूप में भी शिवता वर्णित की गई है तब शान्तता और शिवरूपता

में क्या भेद है, कहो। तुम्हारे द्वारा स्वीकृत शान्त वस्तु भी वस्तु है, वस्तु सत्तामय होती है, सत्ता का अर्थ है होना, भवनकर्तृता। कर्तृत्व स्वातंत्र्यरूप होता है जो कि चिद्रूप इच्छादि शक्तिमान् का ही संभव है। अतः सभी वस्तु शिवात्मक हैं।

६४. न चाप्यत्र भेदेष्वसत्येषु सत्यबुद्ध्या भ्रान्तिरूपा खण्डनास्ति वेदोक्तवत्, यतो भावानां सर्वेषामेव शिवरूपत्वे स्थिते बहुत्वमेकत्वं वा। यत्पुनः शिवतत्त्वेनैक्यस्य कथनं तत्सर्वेषां शिवतत्त्वेन साम्यायोत्कर्षापकर्षनिवारणाय, (शिदृवृ, १२७)

('नेह नानास्ति किंचन' नियम के अनुसार) जैसे वेदों में असत्य भेदों में सत्य बुद्धि को भ्रान्ति बताते हुए उसका खंडन किया गया है वैसा यहाँ (शिवाद्वयवाद में) नहीं है। क्योंकि सभी भाव पदार्थ शिवरूप में स्थित हैं—चाहे उनमें बहुत्व मानें या एकत्व। जो शिवतत्त्व से ऐक्यरूप में पदार्थों को कहा जाता है वह सब शिवतत्त्व से समानता बताने के लिये है, उनके श्रेष्ठत्व और निकृष्टत्व का खण्डन करने के लिये है।

६५. एवं सुवर्णवत् परमेश्वर एव ·· इच्छादिशक्तिमान् तथा तत्त्वभुवनं कार्यकरणादिप्रकारवैचित्र्येण सर्वैपंदार्थैरित्थंभूतलक्षणैः स्थितोऽतः शिवात्मकमेव सर्वम्……। (शिदृवृ, १०६)

जैसे (कटक, कुण्डल आदि में सामान्यता) सुवर्ण (ही) है उसी प्रकार इच्छादि शक्तियों से नित्य सम्पन्न परमेश्वर, समस्त तत्त्वसमूह, कार्य करण आदि विचित्ररूपों में समस्त पदार्थों के लक्षणों से सम्पन्नरूप में अवस्थित है। अतः यह समग्र विश्व शिवात्मक ही है।

सत्यासत्यविभाग

६६. यदसत्तदसद्युक्ता नासतः सत्स्वरुपता।
सतोऽपि न पुनः सत्तालाभेनार्थो …… ॥ (ईप्रका, २.३५)

जो असत् है वह असत् ही है। असत् की सद्रूपता नहीं हो सकती। जो पदार्थ सत् है उसका पुनः सत्ता लाभ प्राप्त करना निष्प्रयोजन है।

६७. घटज्ञानरजतज्ञानयोश्च द्वयोरपि सत्यत्वे सम्यग्मिथ्यात्वभेदस्तर्हि कथम्? व्यवहाराय व्यवहारप्रयोजनोऽसौ। (शिदृवृ, १४६)

घटज्ञान और (शुक्तिका में) रजत ज्ञान इन दोनों ही ज्ञानों के सत्य होने से सम्यग्ज्ञान और मिथ्याज्ञान दोनों में भेद कैसे होगा ? (उत्तर) यह भेद व्यवहार के लिए, व्यवहार के उद्देश्य से (शिवरचित) है।

६८. अभावोऽपि ज्ञायमानो बोधात्मैव तदात्मकत्वाच्च विश्वरूप एव । तस्मान्नास्त्यभावात्मकमशिवरूपं क्वचिदपि विश्वमध्ये । (शिदृ, १६०)

जाना हुआ अभाव भी ज्ञानरूप ही होता है और ज्ञानरूप होने से विश्वरूप ही है, इसलिये इस विश्व में अभावात्मक या अशिवरूप कुछ भी नहीं है।

६९. लोकव्यवहाराय वा सर्वं शास्त्रवादिप्रतिवाद्यादि । लोकव्यवहारश्च तदभेदाख्यातिमयो न वस्तुगतः । (शिदृ १२९)

शास्त्रों को लेकर जो पक्ष-विपक्षरूप से विचार किया जाता है वह सब लोकव्यवहार मात्र के लिए है और लोकव्यवहार उस शिव से अभेद के अज्ञानवाला है, वास्तविक नहीं ।

७०. सर्वथा यथा यत् प्रतिभातं तथैव तत्, नान्यथा कर्तुं शक्यते इति सत्यमेव न किंचिन्मिथ्यात्वम् । (शिदृ, १५५)

जो जैसा प्रतिभासित होता है वह वैसा ही है। उसे प्रतिभासनरूप से भिन्न अन्य रूप में (अनुभूत) नहीं किया जा सकता । अतः वह उसी रूप में सत्य है। यहाँ (लोक में) मिथ्या (असत्) कुछ भी नहीं है।

सम्बन्ध

७१. द्विष्ठस्यानेकरुपत्वात्सिद्धस्यान्यानपेक्षणात् ।
पारतंत्र्याद्ययोगाच्च तेन कर्तापि कल्पितः ॥ (ईप्रका, १.१६)

सम्बन्धो द्विष्ठो, न चैकेनात्मनोभयत्र स्थितिर्युक्ता, न च द्वयोः सिद्धयोरन्योन्यापेक्षा, नापि स्वात्ममात्रनिष्ठयोः पारतन्त्र्यरुपः सम्बन्धः । ततो यथा ज्ञातृत्वं कल्पितं तथा कर्तृत्वमपीति कथमात्मा सर्वेश्वर इति । (वही, वृत्ति)

(बौद्धमत)

द्विष्ठ के अनेक रूप होने से, सिद्ध को अन्य की अपेक्षा न होने से, परतंत्रता होने और योग (संश्लेष) न होने से कर्ता भी काल्पनिक ही है।

सम्बन्ध द्विष्ठ होता है, किंतु एक वस्तु का अपने ही रूप में दो स्थानों पर रहना तर्कसंगत नहीं है। दोनों (सम्बन्धी) यदि सिद्ध हैं तो उन्हें परस्पर एक दूसरे की अपेक्षा नहीं हो सकती। जो स्वात्ममात्र में अवस्थित हो ऐसे (सम्बन्धियों में) परतंत्रतारूप सम्बन्ध भी नहीं हो सकता। अतः (बौद्ध मतानुसार) जैसे प्रमातृत्व कल्पित है उसी प्रकार कर्तृत्व भी कल्पित है। तब (शैव मतानुसार) आत्मा सर्वेश्वर कैसे सिद्ध होता है ?

७२. तत्र तत्र स्थिते तत्तद्भवतीत्येव दृश्यते।
नान्यन्नान्योऽस्ति सम्बन्धः कार्यकारणभावतः ॥

(ईप्रका, १.१५)

पूर्वस्मिन्सति परस्य सत्तेत्येतावन्मात्रेऽनुभवः, क्रियावच्च न क्रियाकारकादिसम्बन्धः कश्चिद्भिन्नस्यानुपलम्भात्। (वही, वृत्ति)

(बौद्धमत)

उस-उस के होनेपर वह-वह होता है—ऐसा ही (परमार्थतः) अनुभव होता है। इसके अतिरिक्त कार्यकारणभावरूप से दूसरा कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

पूर्वक्षणवर्ती वस्तु के होने पर परक्षणवर्ती वस्तु की सत्ता होती है यही अनुभवसिद्ध है। जैसे क्रिया नहीं है उसी प्रकार क्रियाकारक आदि सम्बन्ध भी नहीं है क्योंकि (सम्बन्धी से) भिन्न अन्य किसी की उपलब्धि नहीं होती है।

७३. ...... अविद्या हि अविद्यात्वाभ्युपगमादेवासत्या न चासत्यया सम्बन्धो रुपश्लेषमयो युक्तः। (शिदृवृ, ५०)

अविद्या, अविद्यारूप में स्वीकृत होने से असत्य है और असत्य से रूपश्लेषरूप सम्बन्ध मानना तर्कसंगत नहीं है।

७४. स्वात्मनिष्ठा विविक्ता वा भावा एकप्रमातरि ।
अन्योन्यान्वयरुपैक्ययुजः सम्बन्धधीपदम् ॥ (ईप्रका,२.१२)

राज्ञः पुरुष इत्यादिसम्बन्धधियोऽन्तेः समन्वयादैक्यं बहिः सम्बन्धभेदं चालम्बन्ते । (वही, वृत्ति)

विविध भाव पदार्थ एक प्रमाता में स्वात्मरूप से अवस्थित हैं। एक दूसरे से परस्पर एकता की संगति रखते हुए वे सम्बन्धरूप ज्ञान (बुद्धि) में स्थित हैं।

७५. क्रियासम्बन्धसामान्यद्रव्यदिक्कालबुद्धयः ।
सत्याः स्थैर्योपयोगाभ्यामेकानेकाश्रया मताः ॥
(ईप्रका, २.६)

क्रिया, सम्बन्ध, जाति, द्रव्य, दिक्, काल आदि ज्ञान सत्य हैं क्योंकि (आत्मा) स्थिर (नित्य) है तथा इन (क्रियादि) का (लोकव्यवहार में) उपयोग है। ये (क्रिया आदि ज्ञान) अनेकता में एकतारूप (या भेदाभेदरूप) हैं—ऐसी शैवों की मान्यता है।

७६. अनेकस्यैकता हि सामानाधिकरण्यम् ।
(ईप्रकावृत्ति, २. २१)

अनेक में एकता होना ही सामानाधिकरण्य है।

परिशिष्ट–२

अकारादिक्रमानुसार

अजडप्रमातृसिद्धिकारिकासूची

कारिकांश	का.	पृ.
इदमित्यस्य विच्छिन्न०	१५	८
इदमित्युचितः संवित्	११	६
उक्ता सैव च विश्रान्ति	२३	१२
उभयोऽप्येष पर्यन्त०	१७	९
एकैव चानुसंधानात्सा	२५	१४
एवमप्यवभासानु०	५	३
एवमर्थक्रियाभासो०	७	४
एवमात्मन्यसत्कल्पाः	१३	७
कथं स्यादविशेषोऽत्र	६	३
तत्राप्यर्थक्रिया सिद्ध०	८	५
ततो भेदे तु भास्यस्य	२७	१५
तदात्मनैव तस्य स्यात्	२१	१२
द्विधा स एष एवात्मा	१६	९
न चाप्यन्वयव्यतिरेका०	१८	१०
न चैवानुभवोऽप्यस्ति	१४	८
न सिद्धोऽप्रथनादेव	१९	११
नार्थव्यवस्था प्राणादा०	२२	१२
प्रख्योपाख्यविषयता०	३	२
प्रख्योपाख्या च सत्ता	२	१
भावव्यवस्था यन्निष्ठा	२६	१४
मा भूद्विशेषः प्रख्यादि०	४	२
मायाभिधायास्त०	२४	१३
यथा सदसतां नैव	१	१३
यद्यप्यर्थस्थितिः प्राण०	२०	११
व्यतिरेकतराभ्यां हि	१२	६
सैवं भूतात्मना स्वेना०	१०	६
संविदप्यपरामर्श०	९	५

परिशिष्ट–३

अकारादिक्रमानुसार
ईश्वरसिद्धिकारिकासूची

कारिकांश	का.	पृ.
अत एव प्रधानस्य	२१	३८
अत्रोच्यते गतिश्चित्रा	१५	३१
अनन्यापेक्षि बीजादि	२६	४१
अन्ये पुनरुपादाने	१७	३१
अन्योन्यार्थक्रियायोग्य०	१४	२९
अर्थित्वविगमान्न स्यात्	४९	५६
अस्ति चार्थक्रियायोगे	६	२१
अस्ति चास्य प्रधानस्य	१९	३८
अस्य तेनोपचारेण	४४	५५
इच्छा नाम कथं सर्व०	३९	५१
ईश्वरस्योपकल्प्येत	२५	३९
एवं च हेतुः संस्थान०	१२	२८
करोति तमहं देवम् (ब-स)	१	१७
किंतु स्वाभावात्सा तस्य	४३	५५
केवलं बुद्धिमन्मात्र०	९	२५
क्संस्थानवर्जितः (ब-स-द)	४	२०
चेतस्यष्टगुणे जातु	२४	३८
तत्र बुद्धिमतो नाम	१८	३१
तथा च दर्शनत्यागः	५२	५७
तथा चिकीर्षा च विना	३२	४७
तथेश्वरव्यपेक्षास्तु	३०	४३
तदत्र बुद्धिमत्कर्तृ०	७	२२
तन्वादिबुद्धिमद्धेतु०	२	१७
तेनास्य भोगसंसिद्धिः	२०	३८
त्रिगुणात्मप्रधानं च	२७	४१
न कुलालेन नेशेनाप्य०	८	२५
न घटादितयासिद्धः	३५	४८
न स्याज्जातु शरीरादि	३४	४८
निमित्तकारणत्वेन	२८	४२
निमित्तकारणं कर्म	२३	३८
परिणामात्तदेकं हि	४६	५५
परैस्तैरपि हेतूनाम्	१३	२८
पुंसः स्यात्साप्यसंवेद्या	४०	५१
पुंसोऽपि स्यात्प्रधानस्या०	३८	५१
पूर्ववन्न भवेत्कस्मात्	४७	५५
प्रधानमयमृत्पिंडादेव	२९	४२
बुद्धिमत्प्रेरितो वा	३	१८
मुक्तपुंसा कृतार्थत्वात्	४८	५६

कारिकांश	का.	पृ.	कारिकांश	का.	पृ.
यतः स्यादस्य बुद्धेस्तु	३७	५१	संनिवेशविशेषोऽपि	३१	४७
यथा पारार्थ्यमात्रेण	१०	२५	संवेद्यैकस्वभावत्वात्	५०	५६
यथा वा दूरतो धूमात्	११	२६	संस्थानभेदादित्येतत्		
रचना नियमेन स्यात्	३३	४७	(ब-स)	५३	५७
विचित्रे बुद्धिमानेव	५	२०	स्युर्ज्ञातिपुंविवेकानाम्	५१	५६
वेद्या सा वैष तर्ह्येकः	४२	५१	स्वकार्यपरिणामात्र	४५	५५
वैचित्र्यकारी यो यत्र	३६	४८	स्वभाव एव चैषोस्य	२२	३८
स एष हेतुःपरमेश्वरम्	५४	५७	स्वात्मैवायं स्फुरति	५६	५७
समुज्ज्वलन्न्याय०	५५	५७	हेतुमन्तःप्रविश्यान्ये	१६	३१
संकीर्येरन् प्रकाशैक्यात्	४१	५१			

परिशिष्ट–४

अकारादिक्रमानुसार

सम्बन्धसिद्धिकारिकासूची

कारिकांश	का.	पृ.	कारिकांश	का.	पृ.
अपेक्षा पारतंत्र्यं च	३	७६	नानन्तर्यमसम्बन्धात्	५	७७
असतामात्मलाभोक्तेः	४	७६	नैकस्यैक्येऽप्यनेकस्य	६	७७
इति सम्बन्धगत्युक्ता	२१	८०	बहुत्वेऽपि भवेद्वित्वम्	१५	७८
इत्थमाभास एवास्मिन्	९	७७	भावभेदादिसम्बन्ध	२	५९
इत्यस्ति तावदन्यश्च	१४	७८	भेदाभेदात्मसम्बन्ध०	१	५९
उक्तः संवित्तिसिद्धोऽयम्	२३	८०	यतो न कल्पनामात्रम्	७	७७
एकहान्या प्रधानेन	१९	७९	यस्मादाभासलग्नत्वम्	८	७७
एवं च सति वस्तूनाम्	१०	७८	राज्ञः पुरुष इत्येष	१७	७९
तत्रापि यः परामर्श०	११	७८	विमर्शो राज्ञ इत्येकः	१६	७९
तथान्येन प्रधानेन	२०	७९	व्यापारोऽनेन रुद्धोऽसौ	१२	७८
तदेकामर्शवर्त्येक०	१३	७८	षष्ठ्यादिवाच्यः सम्बन्धो	१८	७९
न परं तास्तथा भ्रान्ताः	२२	८०			

परिशिष्ट–५

सिद्धित्रयी

अकारादिक्रमानुसारसमन्वितकारिकासूची

कारिकांश	सिद्धि का.	पृ.	कारिकांश	सिद्धि का.	पृ.
अत एव प्रधानस्य	ईसि, २१	३८	एवमर्थक्रियाभासो	असि, ७	४
अत्रोच्यते गतिश्चित्रा	ईसि, १५	३१	एवमात्मन्यसत्क०	असि, १३	७
अनन्यापेक्षि बीजा०	ईसि, २६	४१	एवं च सति वस्तू०	ससि, १०	७८
अन्ये पुनरुपादाने	ईसि, १७	३१	एवं च हेतुः संस्था०	ईसि, १२	२८
अन्योन्यार्थक्रिया०	ईसि, १४	२६	कथं स्यादविशेषो०	असि, ६	३
अपेक्षा पारतंत्र्यं च	ससि, ३	७६	करोति तमहं देवम्	ईसि, १	१७
अर्थित्वविगमान्न०	ईसि, ४६	५६	किंतु स्वभावात्सा	ईसि, ४३	५५
असतामात्मलाभो०	ससि, ४	७६	केवलं बुद्धिमन्मात्र०	ईसि, ६	२५
अस्ति चार्थक्रिया०	ईसि, ६	२१	वसंस्थानवर्जितः	ईसि, ४	२०
अस्ति चास्य प्रधान०	ईसि, १६	३८	चेतस्यष्टगुणे जातु	ईसि, २४	३८
अस्य तेनोपचारेण	ईसि, ४४	५५	तत्र बुद्धिमतो नाम	ईसि, १८	३१
इच्छा नाम कथं०	ईसि, ३६	५१	तत्रापि यः पराम०	ससि, ११	७८
इति सम्बन्धगत्यु०	ससि, २१	८०	तत्राप्यर्थक्रियासि०	असि, ८	५
इत्थमाभास एवा०	ससि, ६	७७	ततो भेदे तु भा०	असि, २७	१५
इत्यस्ति तावदन्यश्च	ससि, १४	७८	तथा च दर्शनत्यागः	ईसि, ५२	५७
इदमित्यस्य वि०	असि, १५	८	तथा चिकीर्षा च	ईसि, ३२	४७
इदमित्युचितः सं०	असि, ११	६	तथान्येन प्रधानेन	ससि, २०	७६
ईश्वरस्योपकल्प्येत	ईसि, २५	३६	तथेश्वरव्यपेक्षास्तु	ईसि, ३०	४३
उक्तः संवित्तिसिद्धो०	ससि २३	८०	तदत्र बुद्धिमत्कर्तृ०	ईसि, ७	२२
उक्ता सैव च वि०	असि, २३	१२	तदात्मनैव तस्य	असि, २१	१२
उभयोऽप्येष पर्य०	असि, १७	६	तदेकामर्शवर्त्येक०	ससि, १३	७८
एकहान्या प्रधानेन	ससि, १६	७६	तन्वादिबुद्धिमद्धेतु०	ईसि, २	१७
एकैव चानुसंधा०	असि, २५	१४	तेनास्य भोगसंसि०	ईसि, २०	३८
एवमप्यवभासानु	असि, ५	३	त्रिगुणात्मप्रधानं च	ईसि, २७	४१

कारिकांश	सिद्धि का.	पृ.
द्विधा स एष एवा०	असि, १६	९
न कुलालेन नेशेना०	ईसि, ८	२५
न घटादितया सिद्धः	ईसि, ३५	४८
न चाप्यन्वयव्यति०	असि, १८	१०
न चैवानुभवोऽप्य०	असि, १४	८
न परं तास्तथा भ्रा०	ससि, २२	८०
न सिद्धोऽप्रथनादेव	असि, १९	११
न स्याज्जातु शरी०	ईसि, ३४	४८
नानन्तर्यमसम्बन्धात्	ससि, ५	७७
नार्थव्यवस्था प्रा०	असि, २२	१२
निमित्तकारणत्वेन	ईसि, २८	४२
निमित्तकारणं कर्म	ईसि, २३	३८
नैकस्येत्रयेऽप्यनेकस्य	ससि, ६	७७
परिणामात्तदेकं हि	ईसि, ४६	५५
परैस्तैरपि हेतूनाम्	ईसि, १३	२८
पुंसः स्यात्साप्यसं०	ईसि, ४०	५१
पुंसोऽपि स्यात्प्रधा०	ईसि, ३८	५१
पूर्ववन्न भवेत्०	ईसि, ४७	५५
प्रख्योपाख्यविषयता	असि, ३	२
प्रख्योपाख्या च	असि, २	१
प्रधानमयमृत्पिडा०	ईसि, २९	४२
बहुत्वेऽपि भवेद्वि०	ससि, १५	७८
बुद्धिमत्प्रेरितो वा	ईसि. ३	१८
भावभेदादिसम्बन्ध	ससि, २	५९
भावव्यवस्था यन्नि०	असि, २६	१४
भेदाभेदात्मसम्ब०	ससि, १	५९
मा. भूद्विशेषः प्र०	असि, ४	२
मायाभिधायास्त०	असि, २४	१३
मुक्तपुंसा कृतार्थं०	ईसि, ४८	५६
यतो न कल्पनामा०	ससि, ७	७७
यतः स्यादस्य बुद्धे०	ईसि, ३७	५१
यथा पारार्थ्यमा०	ईसि, १०	२५
यथा वा दूरतो	ईसि, ११	२६
यथा सदसतां नैव	असि, १	१३
यद्यप्यर्थस्थितिः	असि, २०	११
यस्मादाभासलग्न०	ससि, ८	७७
रचना नियमेन	ईसि, ३३	४७
राज्ञः पुरुष इत्येष	ससि, १७	७९
विचित्रे बुद्धिमानेव	ईसि, ५	२०
विमर्शो राज्ञ इत्ये०	ससि, १६	७९
वेद्या सा वैष	ईसि, ४२	५१
वैचित्र्यकारी यो	ईसि, ३६	४८
व्यतिरेकतराभ्यां	असि, १२	६
व्यापारोऽनेन रुद्धो०	ससि, १२	७८
षष्ठ्यादिवाच्यः	ससि, १८	७९
स एष हेतुः परमे०	ईसि, ५४	५७
समुज्ज्वलन्न्याय०	ईसि, ५५	५७
सैवं भूतात्मना स्वे०	असि, १०	६
संकीर्येरन् प्रकाशै०	ईसि, ४१	५१
संनिवेशविशेषोऽपि	ईसि, ३१	४७
संविदप्यपरामर्श०	असि, ९	५
संवेद्यैक स्वभाव०	ईसि, ५०	५६
संस्थानभेदादित्ये०	ईसि, ५३	५७
(ब–स)		
स्युर्ज्ञातपुविवेका०	ईसि, ५१	५६
स्वकार्यपरिणा०	ईसि, ४५	५५
स्वभाव एव चैषोस्य	ईसि, २२	३८
स्वात्मैवायं स्फुरति	ईसि, ५६	५७
हेतुमन्तः प्रविश्या०	ईसि, १६	३१

परिशिष्ट–६

सिद्धित्रयी

उद्धरण-सूची

१. **तथोक्तं परैः**

कुम्भकाराद्यधिष्ठानं धटादौ यदि वेष्यते ।
नेश्वराधिष्ठितत्वं स्यादस्ति चेत्साध्यहीनता ।।
यथासिद्धे च दृष्टान्ते भवेद्धेतोर्विरुद्धता ।

श्लोकवार्तिक, सम्बन्धाक्षेप, पृ० ८०८
(सिद्धित्रयी, पृष्ठ, २३)

२. सिद्धं यादृगधिष्ठातृभावाभावानुवृत्तिमत् ।
संनिवेशादि तद्युक्तं यस्मात्तदनुमीयते ।।

प्रमाणवार्तिकम्, १. १३

अन्यथा कुम्भकारस्य मृद्विकारस्य कस्यचित् ।
घटादेः कारणात् सिद्ध्येद्वल्मीकस्यापि तत्कृतिः ।।

प्रमाणवार्तिकम्, १. १५
(सिद्धित्रयी, पृष्ठ, २७–२८, ४५)

३. यदुक्तम्

'न स्यात्क्रियाव्यूहविधिस्तथायं
यादृच्छिका··· ··· ··· ··· ··· ।

(सिद्धित्रयी, पृष्ठ, ३३)

४. तदुक्तम्

'विज्ञातारमरे केन विजानीयात् ।'

बृहदारण्यकोपनिषद् , ४. ५. १५

(सिद्धित्रयी, पृष्ठ, ३४)

५. ते हि

'अमिश्राः स्वयं भावास्तान्योजयति कल्पना ।'

धर्मकीर्तिकृतसम्बन्धपरीक्षा, ५

(सिद्धित्रयी, पृष्ठ, ६३, ६६, ७७)

६. तथा चाहुः

'संयुज्यन्ते न भिद्यन्ते स्वतोऽर्थाः पारमार्थिकाः ।
रूपमेकमनेकञ्च तेषु बुद्धेरुपप्लवः ॥'

(सिद्धित्रयी, पृष्ठ, ६४)

७. अभ्युपगत एव च भवद्भिः येनोक्तम्

'अर्थाकारप्रतिभाससंलग्नत्वाद्-
बाधकेनापिदुरुद्धरोऽयं भ्रमः ।'

(सिद्धित्रयी, पृष्ठ, ६६)

८. तथा चाचार्यधर्मकीर्तिः

'बहिर्मुखं च तज्ज्ञानं भात्यर्थप्रतिभासवत् ।
बुद्धेश्च ग्राहिका बुद्धिर्नित्यमन्तर्मुखात्मनि ॥'

प्रमाणवार्तिकम्, २. ४२८

(सिद्धित्रयी, पृष्ठ, ७४)

९. या चैषा प्रतिभानन्तपदार्थक्रमरूषिता ।
अक्रमानन्तचिद्रूपः प्रमाता स महेश्वरः ॥

ईश्वरप्रत्यभिज्ञा, १. ७. १

(सिद्धित्रयी, पृष्ठ, ७५)

परिशिष्ट–७

सिद्धित्रयी में उल्लिखित आचार्य एवं ग्रन्थ

आचार्य / ग्रन्थ	पृष्ठ	आचार्य / ग्रन्थ	पृष्ठ
अन्यत्र (ईश्वरप्रत्यभिज्ञा)	५८	ते (धर्मकीर्ति)	६३
अन्ये	३१	धर्मकीर्ति	७४
ईश्वरप्रत्यभिज्ञा	१२,१५,६७,६८	परैः (कुमारिलभट्ट)	२३
	६६,७३,७४,७५,८०	प्रमाणवार्तिकम्	२७,२८,६३
केचित्	३१		६६,७४,७७
टीका (ईश्वरप्रत्यभिज्ञा टीका)	७६	बृहदारण्यकोपनिषद्	३४

परिशिष्ट–८

सिद्धित्रयी में उल्लिखित दर्शन एवं सिद्धान्त

दर्शन / सिद्धान्त	पृष्ठ	दर्शन / सिद्धान्त	पृष्ठ
ईश्वरवादिनापि	३३	सर्ववादिसिद्धैव	२१
तेषाम् (सौगतानाम्)	२७	सौगतानाम्	२७
द्वैते	५८	सौगतैरपि	२७
परमाणुवाद	३२	सांख्यम्	४१
परैः	२८	सांख्याः	२६
प्रत्यभिज्ञानये	७७	सांख्यान्	४१
(विज्ञानसन्ततौ व्यवस्था)		सांख्येनैव	२२
केषाञ्चित्	६४	स्वभावदृक्	५७
विज्ञानसन्तानवादिनाम्	१	स्वातंत्र्यवादस्य	७
शान्तब्रह्मवाद	५	स्वाभाविकपुरुषवादे	५४
सर्ववादिभिः	३०	क्षणपरिणामनये	२६

परिशिष्ट–९

आचार्य अभिनवगुप्तविरचिता

ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी एवम् ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृतिविमर्शिनी में उद्धृत सिद्धित्रयी

अजडप्रमातृसिद्धि, कारिका १३

ईप्रवि–१. १. ४, पृ. ४२; १. १. ५३, पृ. १६३

ईप्रवित्रि–(भाग १) १. १, पृ. ६७; १. ३, पृ. २२०;

(भाग २) १. ५, पृ. ७७; १. ५, पृ. ८१;

अजडप्रमातृसिद्धि, कारिका १५

ईप्रवि–१. १. १, पृ. १८; १. ५, १२, पृ. १९९

ईप्रविवि (भाग १) १. १, पृ. ५४; १. १, पृ. ८३

(भाग २) १. ४, पृ. ५९; १. ५, पृ. १८६;

१. ५, पृ. २१५;

(भाग ३) २. १. पृ. ४; ३. १. पृ. २६८

अजडप्रमातृसिद्धि, कारिका २०–२१

ईप्रवि–१. ३. ७, पृ. १११; १. ८. ९, पृ. ३३६

ईप्रविवि (भाग १) १. १. पृ. ६२; १. १, पृ. ९१;

१. ३, पृ. २२५; १. ३, पृ. २८७;

(भाग २) १. ५, पृ. २१३; १. ५, पृ. २१८;

१. ६, पृ. २९४; १. ८, पृ, ४३३;

१. ८. पृ. ४३४;

(भाग ३) २. २. पृ. ५३; २. ४, पृ. २४५;
३. २. पृ. ३०४; ३. २, पृ. ३०८;
३. २. पृ. ३३६; ४. १, पृ. ३७२;
४. ३, पृ. ३६८

अजडप्रमातृसिद्धि, कारिका २२–२३

ईप्रवि–१. १. १, पृ. १६;
ईप्रविवि–(भाग १) १. १, पृ. ६२;
(भाग २) १. ५, पृ. १३५;
(भाग ३) २. १. पृ. ३

सम्बन्धसिद्धि, कारिका १

ईप्रवि– (भाग १) २. २. ४, पृ. ४४;
ईप्रविवि–(भाग २) १. ७. पृ. ३५१;
(भाग ३) २. २. पृ. ५१

सम्बन्धसिद्धि, कारिका ३

ईप्रविवि–(भाग १) १. २, पृ. २०३

परिशिष्ट–१०

महत्त्वपूर्ण शब्दसूची

अख्याति १२,१३.६७,६८,७२,७६
अद्वय १५
अद्वैत ८
अर्धजरतीय (न्याय) ३९
अपरिमित (प्रमाता) ९
अर्थक्रिया ३–५,१८,१९,२१,२८,२९ ४२,४४,५२
अर्थव्यवस्था १२,१३
अहन्ता ६
अहंभाव ८, १२–१४
उपादान (कारण) १८–२१, २७, २९–३२, ३६,४३
काकतालीय (न्याय) ४४,५२
कैवल्य ३६
जीव ११
जीवता ९.१२
जीवत्व १२
निमित्त (कारण) १९,३२, ३६–४२, ५०,५२
निर्विमर्श ५,६,८,११
परप्रमाता ८,११
परामर्श ५,१३,१४,७०–७२,७४,७८
पराशक्ति १४
परिमित (प्रमाता) ९ ११,१३,७८
पशुभूमिका ११
पुरुषार्थ ३२,३५–४३,४५,४८–५२,५५
पूर्णाहन्ता ८,१२–१४
प्रकाश २,३,५–१२,१५,३४,३५,४८, ५०,५१,५९,७२,७४
प्रकाशविमर्श २
प्रकृति ३२–३४,३७,३९,५२,५३
प्रख्यादि २,३
प्रख्योपाख्या १,२
प्रत्यवमर्श ८,१०
प्रधान ३२,३८–४२, ४८–५२,७३
प्राणपुर्यष्टक ११
भावव्यवस्था १४
भ्रम ६५,६६
भ्रान्ति ११,६५,६६,७६,७७,८०
महेश्वर १७,५७,७५
माया ७,११,१३,६७,७२,७४,७[illegible]
मायीय प्रमाता ७२
मित (प्रमाता) ९,११
मुक्त ५३,५५,५६,६१
मोक्ष ५४,५६
वस्तुव्यवस्था १३
विमर्श ८,१०,११,१३,१४,७२, ७८–८०
शिव ११–१३,१५,७४
समनन्तरप्रत्यय ६४
सहकारी (कारण) १८,१९,२९–३१, ४३, ४४, ४८
संवित् ३–१०,१३–१५,३३,३५,५०, ५६,७४,८०
स्वलक्षण १,२,६,२६–२८,७५
स्वातंत्र्य ६–८,१०,१२–१४,५२,५४

अन्य प्राप्तिस्थान

चौखम्भा ओरियन्टालिया

CHAUKHAMBHA ORIENTALIA

बैंग्लो रोड, ९ यू०बी० जवाहर नगर
निकट किरोड़ीमल कालेज
दिल्ली-110007
Phone : 2911617, 238790